अतंत जोत नखन की, ताको क्यों कर कहूं प्रकास।
केहे केहे मुख एता कहे, जोत पोहोंची जाए आकास।। ९ ।।

नखों की जोत बेशुमार है। इसको किस तरह से बताएं? मेरे मुख से तो इतना ही कहा जाता है कि इसकी किरणें आकाश तक जाती हैं।

जो सुंदरता अंगुरियों, और सुंदरता नख जोत।
ए सोभा न आवे सब्द में, केहे केहे कहूं उद्दोत।। १० ।।

उंगलियों की सुन्दरता और नखों के जोत की सुन्दरता और प्रकाश की शोभा शब्दों में नहीं आती।

तेज जोत कछू और है, सोभा सुन्दरता कछू और।
पर ए अंग नूरजमाल के, याको नहीं निमूना ठौर।। ११ ।।

जब भी देखते हैं तो इन नखों का तेज और जोत का कुछ नया ही रूप होता है। इस तरह शोभा और सुन्दरता भी कुछ और ही हो जाती है। श्री राजजी महाराज के अंगों जैसा कोई नमूना है ही नहीं, तो कैसे बताएं?

जोत में एकै रोसनी, सोभा सुन्दर गुन अनेक।
सोभा रंग रोसन नरमाई, रस मीठे कई विवेक।। १२ ।।

जोत में एक ही रंग दिखाई देता है, परन्तु शोभा और सुन्दरता में अनेक गुण दिखाई देते हैं। शोभा में रंगों की नरमाई की जोत है। कई तरह के मीठे रसों का अनुभव होता है।

सोभा माहें सलूकियां, और खुसबोई सुखदाए।
सुख प्रेम कई खुसालियां, इन जुबां कही न जाए।। १३ ।।

शोभा में बनावट और सुख देने वाली खुशबू है। इस सुख से प्रेम और कई तरह की खुशी मिलती है। यह यहां की जबान से वर्णन में नहीं आ सकती।

अर्स बातें सुख बारीक, सुपन बानी न आवे सोए।
कछुक जाने रूह अर्स की, जो बेसक जागी होए।। १४ ।।

परमधाम के सुख की यह खास बातें हैं जो सपने की वाणी से नहीं कही जा सकती हैं। जो आत्मा जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागृत हो गई हो, उसको ही इसका कुछ अनुभव होता है।

महामत कहे हक हुकमें, ऐसा सुख ना दूजा कोए।
पांउं मासूक के आसिक, पिए रस धोए धोए।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से श्री महामतिजी कहती हैं कि आशिक रूहें श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को धो-धोकर पीती हैं। पीकर जो रस लेती हैं, उसके समान दूसरा कोई सुख नहीं है।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ २९१ ॥

चरन हक मासूक के उपली सोभा

फेर फेर चरन को निरखिए, रूह को एही लागी रट।
हक कदम हिरदे आए, तब खुल गए अन्तर पट।। १ ।।

मेरी रूह को बार-बार श्री राजजी महाराज के चरण कमलों को देखने की चाहना लगी है। जब श्री राजजी महाराज के चरण दिल में आ गए तो आत्मदृष्टि खुल गई।

Nijanand App

गुन केते कहूं इन चरन के, आवें न माहें सुमार।
याही वास्ते खेल देखाइया, रूह देखसी देखनहार।। २ ।।

इन चरणों के गुणों का कहां तक वर्णन करूं? यह बेशुमार हैं। रूहों को इसी वास्ते खेल दिखाया है कि रूहें खेल में इसका अनुभव करें।

बरनन करत हों चरन की, अर्स सूरत हक जात।
ए नेक कहूं हक हुकमें, सोभा सब्द न इत समात।। ३ ।।

मैं श्री राजजी महाराज के चरण कमलों का तथा रूहों के स्वरूप का वर्णन करती हूं। श्री राजजी के हुकम से मैं थोड़ा ही कहती हूं, क्योंकि यह शोभा शब्दों में नहीं आती।

कदम तली अति उज्जल, निपट नरम रंग लाल।
रूहें आसिक इन मासूक की, ए कदम छोड़ें ना नूरजमाल।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की तली अति उज्ज्वल और नर्म है। लाल रंग है। आशिक रूहें अपने माशूक श्री राजजी महाराज के चरणों को नहीं छोड़ेंगी।

कही सुछम सूरत अमरद की, ए कदम भी तिन माफक।
रस रंग सोभा सलूकी, देख अर्स सहूरें हक।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप को अमरद कहा है। यह चरण कमल भी उसी के अनुसार हैं। इन चरणों के रंग की सलूकी (छवि) और रस की शोभा को जागृत बुद्धि के ज्ञान से देखो।

लांक सलूकी दोऊ कदम की, लाल एड़ी निपट नरम।
गौर रंग रस भरे, जुबां क्या कहे सिफत कदम।। ६ ।।

दोनों चरण कमलों की तली की गहराई की सलूकी (छवि) और लाल एड़ियां जो अति नर्म हैं और जिनका रंग गोरा है, रस से भरी हैं। ऐसे चरण कमलों की सिफत जबान कैसे करेगी?

सलूकी कदम तलीय की, ऊपर सलूकी और।
छब हक कदम की क्यों कहूं, ए जो जुबां इन ठौर।। ७ ।।

चरणों के नीचे की सलूकी और ऊपर की सलूकी अलग तरह की हैं। ऐसे श्री राजजी के चरण कमलों का वर्णन यहां की जबान से कैसे करूं?

हक हादी रूहें निसबत, ए अर्स की वाहेदत।
जो रूह होवे अर्स की, सो क्यों छोड़ें ए न्यामत।। ८ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें परमधाम में सब एक तन और एक दिल हैं। जो परमधाम की रुहें हैं वह इस न्यामत को कैसे छोड़ सकती हैं?

ए कदम ताले मोमिन के, लिखी जो निसबत।
तो आठों जाम रूह अटकी, बीच अर्स खिलवत।। ९ ।।

मोमिनों का सम्बन्ध श्री राजजी महाराज के चरण कमलों से है। जहां रात-दिन रूह परमधाम मूल-मिलावा में अटकी रहती हैं, क्योंकि श्री राजजी के चरण मूल-मिलावा में हैं।

Nijanand App

लग रहे हक कदम को, सोई रूह अर्स की।
ए रस अमृत अर्स का, कोई और न सके पी।। १० ।।

जो श्री राजजी महाराज के चरणों को पकड़े रहे, वही परमधाम की रूह है। इन चरणों के रस को और कोई नहीं पी सकता।

जो कोई अरवा अर्स की, हक कदम तिन जीवन।
सो जीव जीवन बिना क्यों रहे, जाके असल अर्स में तन।। ११ ।।

परमधाम की जो रूहें हैं उनका जीवन ही श्री राजजी महाराज के चरण कमल हैं। वह आत्मा अपने जीवन श्री राजजी महाराज के चरण कमलों के बिना कैसे रह सकती हैं, क्योंकि रूह की परआतम भी अखण्ड परमधाम में है।

हकें अर्स कह्या अपना, जो अर्स दिल मोमिन।
सो मोमिन उतरे अर्स से, है असल निसबत तिन।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिन के दिल को अपना अर्श कहा है। वह मोमिन अब परमधाम से उतरकर खेल में आए हैं, इसलिए मोमिनों की निसबत श्री राजजी महाराज के चरणों से है।

ए जो मोमिन उतरे अर्स से, अर्स कह्या दिल जिन।
हक कदम हमेसा अर्स में, ए कदम छोड़ें ना मोमिन।। १३ ।।

परमधाम से मोमिन खेल में उतरे हैं। उनके दिल को श्री राजजी का अर्श कहा है। श्री राजजी के चरण हमेशा अर्श में रहते हैं, इसलिए मोमिन इन चरण कमलों को नहीं छोड़ते।

हकें तो कह्या अर्स दिल को, जो इनों असल अर्स में तन।
हक कदम छूटे दिल से, ताए क्यों कहिए मोमिन।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अर्श इसलिए कहा है, क्योंकि इनकी परआतम (असली तन) परमधाम में है। अब खेल में जिनसे श्री राजजी के चरण छूट जाएं उनको मोमिन कैसे कहा जाए?

हक कदम मोमिन दिल में, और कदम रूह हिरदे।
ए कदम नैन पुतली मिने, और रूह फिरत सिर पर ले।। १५ ।।

श्री राजजी के चरण मोमिनों के दिल में हैं और धनी के चरण ही रूह के दिल में हैं, जिसे अपने नयनों को पुतलियों में बसाकर रूहें उसी में मग्न रहती हैं।

हकें बैठक कही अपनी, दिल मोमिन का जे।
जिन दिल हक आए नहीं, सो दिल मोमिन कहिए क्यों ए।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल में अपनी बैठक कही है। जिसके दिल में श्री राजजी महाराज नहीं आए उसको मोमिन कैसे कहें?

आसमान जिमी के लोक का, सब्द छोड़े ना सुरिया को।
बिन मोमिन सब दुनियां, खात गोते फना मों।। १७ ।।

संसार में आसमान और जमीन के लोक सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप) को छोड़कर आगे का वर्णन नहीं कर सके, इसलिए मोमिन के बिना सारी दुनियां नाशवान संसार में गोते खा रही है।

Nijanand App

सुरिया पर ला मकान है, तिन पर नूर अर्स।
अर्स पर अर्स अजीम, पोहोंचें मोमिन इत सरस।। १८ ।।

ज्योति स्वरूप (आदि नारायण) के ऊपर निराकार है। निराकार के ऊपर अक्षरधाम और अक्षरधाम के ऊपर परमधाम है। यहां पर मोमिन का मूल ठिकाना है।

अर्स दिल मोमिन तो कह्या, अर्स बका सुध मोमिनों में।
चौदे तबकों गम नहीं, मोमिन आए हक कदमों से।। १९ ।।

अखण्ड परमधाम की सुध मोमिनों को है, इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श कहा है। मोमिन श्री राजजी महाराज के चरणों से आए हैं। जिसकी चौदह लोकों के लोगों को खबर नहीं है, वह पहुंच ही नहीं सकते।

सोई कहिए मोमिन, जिन दिल हक अर्स।
सो ना मोमिन जिन ना पिया, हक सुराही का रस।। २० ।।

उनको मोमिन कहना चाहिए जिनके दिल में श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं। वह मोमिन नहीं हैं, जिन्होंने श्री राजजी महाराज के दिल के गंजान गंज इश्क की सुराही का रस नहीं पीया है।

हकें दिल को अर्स तो कह्या, करने मोमिन पेहेचान।
कहे मोमिन उतरे अर्स से, तन अर्स एही निसान।। २१ ।।

मोमिनों की पहचान कराने के लिए श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अर्श किया है और यह भी कहा है कि मोमिन परमधाम से खेल में उतरे हैं। इनकी परआतम परमधाम में है। यही उनकी पहचान है।

रूहें उतरी अपने तनसे, और कह्या उतरे अर्स से।
तन दिल अर्स एक किए, हकें कदम धरे दिलमें।। २२ ।।

मोमिनों की आतम उनकी परआतम से उतरी है और यह भी कहा है कि यह परमधाम से उतरे हैं। जिस दिल में श्री राजजी महाराज ने अपने चरण कमल रखे हैं, वह दिल और तन एक हो गए, अर्थात् वह तन भी श्री राजजी का ही हो गया।

ए निसबत असल अर्स की, हकें जाहेर तो करी।
दिल मोमिन अर्स तो कह्या, जो रूहें दरगाह से उतरी।। २३ ।।

यह सम्बन्ध मोमिनों का असल परमधाम का है, जिसे श्री राजजी महाराज ने यहां जाहिर किया है। रूहें जो परमधाम से उतरी हैं उनके ही दिल को अर्श करके बैठे हैं।

ख्वाब वजूद दिल मोमिन, हकें कह्या अर्स सोए।
अर्स तन मोमिन दिल से, ए केहेने को हैं दोए।। २४ ।।

मोमिनों के सपने के तन के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है, इसलिए श्री राजजी महाराज का अर्श और मोमिनों का दिल कहने के लिए दो हैं और वास्तव में एक हैं।

मोमिन असल तन अर्स में, और दिल ख्वाब देखत।
असल तन इन दिल से, एक जरा न तफावत।। २५ ।।

मोमिनों के असल तन परमधाम में हैं और उस तन के दिल सपना देख रहे हैं, इसलिए असल तन और संसार का दिल में जरा भी फरक नहीं है।

Nijanand App

तो हक सेहेरग से नजीक, ए विध जानें मोमिन।
अर्स दिल मोमिन तो कह्या, जो निसबत अर्स तन।। २६ ।।

तो श्री राजजी महाराज को सेहेरग (प्राण की नली) से नजदीक इस तरह से कहा है कि इस हकीकत को मोमिन जानते हैं। इन मोमिनों के दिल को अर्श इसलिए कहा है कि इनकी परआतम परमधाम में है।

ए बारीक बातें अर्स की, ए मोमिन जानें सहूर।
तो हक कदम दिल अर्समें, हक सहूरसे नाहीं दूर।। २७ ।।

यह परमधाम की खास बातें हैं जिनको जागृत बुद्धि से मोमिन जानते हैं। श्री राजजी महाराज के चरण कमल मोमिनों के दिल में होने से श्री राजजी महाराज मोमिनों से दूर नहीं हैं।

ए ख्वाब देखे सो झूठ है, सत सोई जो माहें वतन।
सांच बैठी कदम पकड़के, झूठमें न आए आपन।। २८ ।।

सपने में जो यह सब देख रहे हैं, झूठा है। सच्चा अखण्ड वही है जो परमधाम में है। असल तन श्री राजजी महाराज के चरणों को पकड़कर बैठे हैं और झूठे संसार में अपनी आत्माएं आई हैं, हम नहीं आए हैं।

ए विचार देखो मोमिनों, हक देखावें अपने सहूर।
इन दिल को अर्स तो कह्या, जो कदम नहीं आपनसे दूर।। २९ ।।

हे मोमिनो! विचार करके देखो श्री राजजी महाराज अपना ज्ञान देकर दिखला रहे हैं, इसलिए तुम्हारे दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श कहा है, क्योंकि धनी के चरण अपने से दूर नहीं हैं। वह दिल के अन्दर हैं।

जो रूह देखे लांक लीकको, तो रूह तितहीं रहे लाग।
अर्स रूहोंको इन लीक बिना, सुख दुनियां लागे आग।। ३० ।।

यदि रूह श्री राजजी के चरण कमल के तले की गहराई की रेखा को देखती है तो वह अटक जाती है। उसे फिर इन चरणों की रेखा के अतिरिक्त सारी दुनियां के सुख आग के समान लगते हैं।

एक लीक भी रूहथें न छूटहीं, तो क्यों छूटे तली कोमल।
अर्स रूहें इन लीक बिना, तबहीं जाए जल बल।। ३१ ।।

जब रूह एक रेखा में ही अटक जाती है तो तली की लांक को कैसे छोड़े? परमधाम की रूहें इन रेखाओं को देखे बिना मर मिट जाएंगी।

ए कदम तली की जोत से, आसमान जिमी रोसन।
दिल मोमिन कदम बिना, अंग हो जाए सब अगिन।। ३२ ।।

चरण कमलों की तली की जोत आसमान तक जाती है। मोमिनों के दिल श्री राजजी के चरण कमल बिना आग के समान जलने लगते हैं।

चकलाई इन कदम की, कदम तली ऊपर सलूक।
ए फिराक मोमिन ना सहें, सुनते होंए टूक टूक।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की तली की सुन्दरता तथा ऊपर की सुन्दरता अर्श से अलग होने पर मोमिन सहन नहीं कर सकते। टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं।

Nijanand App

सोभा कदम तलीय की, और सोभा सलूकी नखन।
सोभा अंगुरी अंगूठे, क्यों छोड़ें आसिक तन।। ३४ ।।

चरण की तली की शोभा और नाखून की सलूकी और उंगलियों तथा अंगूठे की शोभा आशिक मोमिन कैसे छोड़ सकते हैं?

फना टांकन की सलूकी, और छब घूंटी काड़ों।
अर्स रूहें जुदागी ना सहें, जाके असल तन अर्स मों।। ३५ ।।

चरण कमलों के पंजे की सलूकी, घूंटी और काड़ों की छाँवे की जुदाई रूहें सहन नहीं कर सकतीं, जिनके असल तन परमधाम में हैं।

पीड़ी घूंटन पांउं माफक, सोभा अति सुन्दर।
ए कदम सुध तिने परे, जो रूह बेधी होए अन्दर।। ३६ ।।

पिंडली, घुटना चरणों के माफक ही सुन्दर है। इन चरणों की सुध रूहों को ही होती है, जिनके दिल चरणों की जुदाई से बिंधे पड़े हैं।

विचार तो भी याही को, रूह नजर तो भी ए।
जो रूह इन कदम की, रहे तले कदमै के।। ३७ ।।

जो आत्मा सदा श्री राजजी के चरणों में रहती है, वही इनका विचार कर सकती है और वही इन्हें देख सकती है।

हाथों कदम न छोड़हीं, रूह हिरदे माहें लेत।
हक कदम खैंचें रूह को, सब अंगों समेत।। ३८ ।।

रूह के हाथ से श्री राजजी के चरण नहीं छूटते, इसलिए रूह अपने दिल में उन चरणों को बसा लेती है। फिर श्री राजजी के चरण रूह को सब अंगों सहित अपनी तरफ खींचते हैं।

जेते अंग आसिक के, सो सब कदमों लगत।
ए गत सोई जानहीं, जिन अंग रूह खैंचत।। ३९ ।।

आशिक रूहों के तन के सभी अंग श्री राजजी महाराज के चरणों की चाहना करते हैं। इस हकीकत को वही जानते हैं जिन अंगों को चरण अपनी तरफ खींचते हैं।

कई गुन हक कदम में, सब गुन खैंचें रूह को।
मासूक गुझ सोई जानहीं, आए लगी जिनसों।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमलों में कई गुण हैं। सभी गुण रूह को अपनी तरफ खींचते हैं। जो रूह चरणों की तरफ खिंच जाती है, वही श्री राजजी के दिल के रहस्यों को समझ पाती है।

पांउं पीड़ी घूंटन की, जो चकलाई सोभाए।
जेते अंग आसिक के, तिन सब अंगों देत घाए।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण, पिंडली, घुटने की कोमलता की जो शोभा है, वह आशिक के सभी अंगों में घाव करती है।

Nijanand App

क्यों कहूं पीड़ीय की, सलूकी सुख जोर।
ए सुख सब रगन को, और देत कलेजा तोर।।४२ ।।

श्री राजजी महाराज की पिंडली की सलूकी का बयान कैसे करूं? इसके सुख कलेजे की नस-नस को तोड़ देते हैं।

घाव लगत टूटत रगां, इन विध रेहेत जो याद।
मासूक मारत आसिक को, अर्स अंग चरन स्वाद।।४३ ।।

नसों के टूटने से घाव हो जाते हैं। उससे याद सदा बनी रहती है। माशूक श्री राजजी महाराज अपने चरणों के स्वाद के सुख आशिकों को देते हैं।

ए कदम देखे रूह फेर फेर, तली लांक या ऊपर।
दिल मोमिन अर्स कह्या, सो या कदमों की खातिर।।४४ ।।

रूहें बार-बार चरणों की तली को तथा ऊपर के भाव को देखती हैं। इन चरणों के वास्ते ही मोमिनों के दिल को ही अर्श कहा है।

हक कदम अर्स दिल में, सो दिल मोमिन हुआ जल।
अरवा मोमिन जीव जलके, सो रूह जल बिन रहे न पल।।४५ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण मोमिनों के दिल में होने से मोमिनों के दिल को जल के समान कहा है। मोमिन की रूह जल के जीव के समान है, इसलिए जैसे जल के जीव जल के बिना नहीं रहते, उसी तरह मोमिनों की रूह श्री राजजी के चरणों से अलग नहीं रह सकती।

ए बेली फूल रूह मोमिन, सो बेल भई हक चरन।
बेल जुदागी फूल क्यों सहे, यों कदम बिना रहें ना मोमिन।।४६ ।।

मोमिनों की रूह फूल की तरह है और श्री राजजी के चरण बेलि की तरह हैं। अब यह फूल बेलि की जुदाई कैसे सहन करें? अर्थात् मोमिन श्री राजजी के चरणों के बिना कैसे रहें?

जब देखूं कदम रंगको, जानों एही सुख सागर।
जब देखूं याकी सलूकी, आड़ी निमख न आवे नजर।।४७ ।।

जब श्री राजजी महाराज के चरणों के रंग को देखती हूं तो लगता है कि सुखों का सागर यही है। जब चरणों की बनावट की तरफ देखती हूं तो रूह वहीं अटक जाती है और कुछ नजर नहीं आता।

जो आड़ी आवे पलक, तो जानों बीच पड़्यो ब्रह्मांड।
ए निसबत हक वाहेदत, जो अर्स दिल अखंड।।४८ ।।

कदाचित पलक झपक गई तो लगता है कि कोई ब्रह्माण्ड बीच में आ गया है। श्री राजजी महाराज और रूहों का यही सम्बन्ध है। उसी तरह से अर्श दिल अखण्ड है।

ए कदम ताले मोमिन के, सो मोमिन हक चरन।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो रूहें असल अर्स में तन।।४९ ।।

श्री राजजी के चरण कमलों पर मोमिन का अधिकार है। मोमिन और श्री राजजी के चरण एकाकार हैं। मोमिनों के असल तन परमधाम में होने से ही श्री राजजी महाराज ने इनके दिल को अर्श किया है।

Nijanand App

सुन्दरता इन कदम की, सो चुभ रही रूह के दिल।
अरस-परस ऐसी हुई, एक निमख न सके निकल।।५०।।

इन चरणों की सुन्दरता रूह के दिल में चुभ गई है और ऐसी एकाकार हो गई है कि एक क्षण के लिए भी नहीं निकल सकती।

चकलाई इन कदम की, सुख सलूकी देत।
हिरदे जो रूह के चुभत, रुह सोई जाने जो लेत।।५१।।

चरणों की सुन्दरता और सलूकी सुखदाई है। इसे वह रूहें जानती हैं जिनके दिल में यह सुख चुभ जाते हैं।

अति मीठे रसीले रंग भरे, जाको ए चरन मेहेर करत।
सुख सोई जाने रूह अर्स की, जिन दिल दोऊ पांउं धरत।।५२।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल अति रसीले, अत्यन्त मीठे, सुन्दर हैं। जिनके ऊपर मेहर करके श्री राजजी महाराज दोनों चरण कमल हृदय में रख देते हैं, उस सुख को वही रूहें जानती हैं।

सो पल पल ए रस पीवत, फेर फेर प्याले लेत।
ए अमल क्यों उतरे, जाको हक बका सुख देत।।५३।।

ऐसे रूह मोमिन जिनके दिल में श्री राजजी के चरण कमल होते हैं, इश्क के प्याले बार-बार भरकर पीते हैं। श्री राजजी महाराज जिनको अखण्ड सुख देते हैं, यह मस्ती उनकी कैसे उतरेगी?

ए सुख कायम हक के, जिन दिल एह कदम।
सोई रूह जाने ए जिन लिया, या जानत है खसम।।५४।।

जिनके दिल में श्री राजजी महाराज के चरण होते हैं उनके सुख अखण्ड हैं। उस सुख को या रूहें जानती हैं, जिन्होंने सुख लिया है या फिर श्री राजजी महाराज जानते हैं जो सुख देते हैं।

कई विध के सुख कदम में, मेहेर कर देत मेहेरबान।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, इन पर कहा कहे सुभान।।५५।।

श्री राजजी महाराज के चरणों में कई तरह के सुख हैं, जिन्हें मेहर करके श्री राजजी महाराज रूहों को देते हैं, इसलिए उन्होंने रूहों के दिल को अपना अर्श कहा है। इसके ऊपर श्री राजजी महाराज और क्या कहें?

हकें दिल किया अर्स अपना, इन पर बड़ाई न कोए।
ए सुख लें मोमिन दुनी में, जो अर्स अजीम की होए।।५६।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को जब अपना अर्श बना लिया तो इससे बड़ी बड़ाई और क्या दें? अब मोमिन अर्श अजीम के होकर दुनियां में इन सुखों को लेते हैं।

ए सुख क्या जानें खेल कबूतर, कह्या हक का अर्स दिल।
ए जाहेर हुए सुख जानसी, मोमिन मिलावा मिल।।५७।।

संसार के जीव खेल के कबूतर के समान झूठे हैं तो श्री राजजी महाराज के अर्श दिल की हकीकत को क्या समझेंगे? जब मोमिनों का मिलावा मिलेगा तब सबको इस हकीकत का पता चलेगा।

Nijanand App

कदम मेहेबूब के मोमिन, क्यों सहें जुदागी खिन।
तो हकें कह्या अर्स दिल को, कर बैठे अपना वतन।।५८ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की जुदाई एक क्षण के लिए भी मोमिन कैसे सहन कर सकते हैं? जब श्री राजजी महाराज स्वयं मोमिन के दिल को अपना वतन बनाकर बैठे हैं।

दिया मोमिनों बड़ा मरातबा, जेती हक बिसात।
ले बैठे मोमिन दिल में, सब मता हक जात।।५९ ।।

परमधाम की सभी चीजों में मोमिनों का सबसे ऊंचा दर्जा है, इसलिए मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज सभी न्यामतें लेकर बैठे हैं।

हक सूरत किन पाई नहीं, ना अर्स पाया किन।
तरफ भी किन पाई नहीं, माहें त्रैलोकी त्रैगुन।।६० ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप को तथा परमधाम को आज तक किसी ने नहीं पाया। वह कहां है, इसकी भी जानकारी चौदह लोकों में तथा त्रिदेवों में किसी को भी नहीं है।

कह्या चौदे तबक जरा नहीं, तो बका सुध होसी किन।
हक सूरत अर्स कायम, सब दिल बीच कह्या मोमिन।।६१ ।।

जब चौदह तबकों का ब्रह्माण्ड नाशवान है तो अखण्ड परमधाम की सुध किसको होगी? श्री राजजी महाराज का स्वरूप और परमधाम दोनों अखण्ड हैं और अब मोमिन के दिल में हैं।

हक अंग नूर हादी कह्या, मोमिन हादी अंग नूर।
ए सब हक वाहेदत, ज्यों हक नूर जहूर।।६२ ।।

श्री राजजी महाराज के नूर से श्री श्यामाजी महारानी हैं और श्री श्यामाजी महारानी के नूर से मोमिनों के तन हैं। यह सब श्री राजजी महाराज के एक तन और एक दिल हैं। ऐसा जागृत बुद्धि का ज्ञान बताता है।

ए गुझ थीं अर्स बारीकियां, कोई न जाने बका बात।
सो रूहें आए दुनी में प्रगटीं, अर्स बका हक जात।।६३ ।।

परमधाम की यही खास बातें गुझ थीं जिन्हें कोई नहीं जानता था। अब अखण्ड परमधाम की रूहों के दुनियां में आने से बातें जाहिर हो गईं।

कहे हुकम नूरजमाल का, मोहे प्यारे अति मोमिन।
महामत कहे दोनों ठौर, हमको किए धंन धंन।।६४ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम कहता है कि श्री राजजी महाराज को मोमिन बहुत प्यारे हैं। महामतिजी कहते हैं कि हमको दोनों ठिकानों में खेल में तथा परमधाम में धन्य-धन्य किया है।

Nijanand App